मानव स्वभाव के चलते आधुनिकता की विशेषताओं की ओर इनकी नज़रें टिकी हुईं हैं और आधुनिक मानव की नकल करने की ललक उनमें जागी है। ऐसे में वे आदतों का शिकार न हो जाएं इस ओर भी हमें ध्यान देना होगा।

समय के साथ मानव सभ्य हो पाया है। अपनी जरूरतों के अनुसार उसकी खोज और अविष्कारों ने उसे सभ्यता का जामा ओढ़ाया है। यहां के आदिम जनजाति के लोगों को हम अपनी अपेक्षा असभ्य भले ही मान लें, पर यह भी संभव हो सकता है कि सदियों से इन द्वीपों की सीमाओं तक सीमित इनकी अपनी दुनिया में आरंभ से अब तक इन्होंने भी कुछ न कुछ नया जरूर पाया होगा। अपने सीमित संसाधनों से अपने पूवर्जों की अपेक्षा शायद अधिक साधन सम्पन्न हो गए हों। ऐसे में ये अपने पूवर्जों की अपेक्षा जरूर सभ्य कहे जा सकते हैं। इसलिए इनके लिए असभ्य शब्द का इस्तेमाल तर्क संगत नहीं लगता। हां आधुनिकता की दौड़ में बाहरी दुनिया में मानव प्रजाति के सम्मलित प्रयासों की वजह से ज्ञान और विज्ञान में जो प्रगति और विकास संभव हो सका वो भला समुद्र के बीच अंजान पड़े, कुछ द्वीपों तक सीमित उनकी दुनिया में संभव हो भी कैसे सकता था? फिर भी वे हमारी तरह मानव ही तो हैं। उनके शरीर में भी वही रक्त दौड़ रहा है, जो आधुनिक दुनिया के मानव के शरीर में। बस, परिस्थितिवश ही वे आधुनिकता की दौड़ में पिछड़ गए।

अब जब दो सभ्यताएं साथ–साथ है, तो दोनो का शांतिपूर्ण सहअस्तित्व भी जरूरी है। इसके लिए हमें उनकी भावनाओं की कद्र करते, उन्हें हर समस्या से छुटकारा दिलाते और खतरों से बचाते आधुनिकता की मुख्यधारा में शमिल करना है। उनका हाथ थाम, विकास के पथ पर ले चलना है। इस तरह दो सभ्यताओं और संस्कृतियों के बीच वो कड़ी स्थापित हो पाएगी, जो हमारे और आदिम जनजाति के कबीलों के शांतिपूर्ण सहअस्तित्व में मददगार साबित होगी।